अंतिम यात्रा : जीव से शव तक

सृष्टि एक रहस्य है और इस रहस्य को समझने के लिए कई गुरु, ऋषि, संत, फकीर, अवतार (हिंदू

परंपरा में) समय-समय पर पृथ्वी पर आए थे। ऋषियों, मुनियों, संतों, अवतारों आदि द्वारा प्रसारित ज्ञान से मानव समाज बहुत ही उजागर हुआ है और समाज की संस्कृति तदनुसार परिवर्तन होता गेया। रहस्य अंधेरे के समान हे, लेकिन अंधेरे जब प्रकाश के माध्यम से सुलझाया जाता है तो इसे ज्ञान कहा जाता है। इसलिए रहस्य के विभिन्न स्तर और ज्ञान के विभिन्न स्तर हैं। तो रहस्य का अंत कहाँ है? और ज्ञान का अंत कहाँ है? इस स्थूल संसार मे मृत्यु अनीबार्य हे ये सभी जानते हुए अंजान बने हुएँ है ओर मृत्यु के इंतेजार मे बैठे हुए हैं।

लेकिन क्या फिर भी हम इससे मुक्त हुए है नही न । तो इसका क्या कारण है ?

धरती पर आयें विभिन्न अवतारों , संतों , फकीरों , गुरूओं , ज्ञानी पुरूषों , इत्यादि ने आत्मा के विषय में बहुत कुछ कहा है ।

भगवान श्री कृष्ण ने मृत्यु के विषय मे भगवद्गीता में कहा है कि मनुष्य जिस प्रकार वस्त्र बदलता है उसी प्रकार आत्मा एक शरीर को त्यागकर दुसरा

शरीर धारण करती है । शरीर नश्वर है किंतु आत्मा अमर है उसकी मृत्यु नहीं होती ।
श्रीमद भगवत गीता के एक श्लोक सबकुछ समझाता है।

अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम् ।
परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् ॥ ९-११॥

जो लोग मूर्ख हैं वो लोग मेरा मनुष्य शरीर को देखकर मेरा अबज्ञा या उपहास करते है और वो लोग मेरा सर्ब शक्तिमान या मेरा दिव्य स्वरूप को सोच या समझ नहीं पाते जबकि मे सारे सृष्टि की संचालन करता हूँ।
उपरक्त श्लोक मे बहुत स्पष्ट शब्दों मे बोला गया है जो लोगो की सोच हद(स्थूल दुनिया) मे पड़ा हुआ है वो कितना भी धनवान या समाज मे प्रतिष्ठित या शिक्षित व्यक्तित्व हो , वो मूर्ख हे क्यूँ की वो परम पिता या सर्व शक्तिमान के दिव्य स्वरूप तथा सृष्टि के संचालन करता स्वरूप को पहचान नहीं पा रहा हे।

चेतन की कहानी

चेतन का जन्म एक व्यापारी के घर हुआ था । चेतन के पिता एक धनी व्यापारी थे। चेतन के पिता का स्वभाव स्वार्थी किस्म का था । वे हर समय पैसों के पीछे भागा करते थे और उनके इसी स्वभाव का असर चेतन पर भी होने लगा था । चेतन का नाम केवल चेतन था उसमें ध्यैर्य , चेतना , बुद्धि की कमी थीं । वो हमेशा चिड़चिड़ा , अडियल , लापरवाह , लालची , घमण्ड़ी , क्रोध जैसे कहीं अवगुण उसकें व्यक्तित्व मे थें । जब वह 19 साल का तब उसके पिता की मृत्यु इस सदमें के कारण हो गयीं कि उसनें जो शेयर मार्केट में पैसा डाला था वह डूब चुका है इस वाक्यांश से

उसे हार्ट अटैक आया और वह चला बसा । जब उसकें अंतिम संस्कार के समय ले जाया जा रहा था तब मुश्किल से 12 या 13 लोग उसकी शवयात्रा में थे जब ये सब चेतन ने देखा और उससे मन ही मन कुछ सवाल उठनें लगे- मेरे पिता तो बहौत धनी थे तो इतने लोग ही कैसे शवयात्रा मे ? , मेरे पिता के बहुत से मित्र थे वे सब कहा है ? , मेरें पिता के ऑफिस स्टाफ कहा है ? तब उसे अपने पिता के व्यवहार और चरित्र के बारे मे समझा तो उसके मन में एक अति तीव्र विचार या एक अहम प्रश्न उठा - मेरी मृत्यु के समय मेरी शवयात्रा मे कितनें लोग होंगे ???

हम मे से बहुतों को ये विचार आया होगा । मेरा मानना है कि एक आदमी की शवयात्रा से हम बहुत सी बात उसके बारे में पता कर सकतें है और कहीं बातें हमे सीखनें को मिलती है -

एक आदमी की अंतिम यात्रा में
सम्मिलित लोगों की संख्या उसके अच्छे या बुरे होने का एक सामान्य संकेत देती है । एक सामान्य

बात ये हमेशा रहति है कि एक सज्जन व्यक्ति के अंतिम यात्रा में लोगों की संख्या अधिक होती है अर्थात् मेरा अर्थ संख्या से नहीं वरन् उन सभी लोगों से है जो सच में आपके जाने का दुःख मना रहे होते है नहीं तो कहीं लोग शवयात्रा में होकर भी नहीं होते है ।

एक शवयात्रा से आप कहीं बातें सीख भी सकते हे

- आपकों चेतन के पिता के शव से कहीं बाते जानने को मिल सकती है , चेतन के पिता जो जीवनभर पैसे के पीछे भागते रहे और अंत समय में वो पैसा कहीं काम नहीं आया । उसकी शवयात्रा में लोगों की कम संख्या ये दर्शाती है कि जीवनभर उसका स्वभाव घमण्ड़ी , स्वार्थी रहा , उसनें किसी से भी अच्छे से बात नहीं की । किसी से भी मधुर संबंध नहीं रखे । उसनें अपनें परिवार को समय नहीं दिया जिसके कारण चेतन का व्यवहार भी उसके समान होने लगा इत्यादि बातें हमे केवल शव से ही ज्ञात हो जाती है ।

मृत्यु होना क्या वास्तविक में ये कोई अचरज की बात होती है । ये तो सर्वविदित है कि जो जन्म

लेता है उसकी मृत्यु भी अवश्यमभावी है तो इसमें दुःख कैसा ?

लेकिन कहीं लोग इसका दुःख मनाते है पर उन्हे मृत्यु होने का नहीं अपितु इस बात का दुःख होना चाहिए कि वो इस बहुमुल्य जीवन का सदुपयोग और कैसे कर सकते थे ।

रतन टाटा भारत के बहुत बड़े धनी व्यक्तियों मे से एक ।

उनकी एक कंपनी की वार्षिक इनकम पड़ौसी देश पाकिस्तान के वार्षिक बजट से भी ज्यादा है पर फिर भी वह व्यक्ति अपनी आधे से ज्यादा संपति दान करता रहता है लेकिन फिर भी वह उतना ही विनम्र है और ये कहीं बार सिद्ध भी हो चुका है वो चाहे विद्यार्थियों के साथ फोटों खीचते वक्त जमीन पर बैठकर या अपनी कंपनी के खिलाफ वेतन बढाने के लिए हड़ताल में बैठे मजदूरों के साथ शामिल होकर ये सिद्ध किया है ।

इस व्यक्ति ने सचमुच जीवन को सार्थक किया है पर कहीं लोग ऐसे भी है जो इसके विपरित ही

व्यवहार करतें है ।

जीवन को सार्थक करनें का मतलब ये तो कतैही नहीं की आप एक सफल बिजनैसमैन हो जाये या विश्व के Top Rich लोगों मे शामिल हो जायें । एक रघुवीर प्रताप जो मिडिल क्लास परिवार से है जहाँ थोडी बहोत सेंविग कर रखी है और उसके बच्चे संस्कारी है , परिवार एक साथ समय बिताता है , एक साथ खाना खाता है , आपस में प्यार है तो वह किसी भी व्यक्ति का एक सुखद क्षण है लेकिन ये केवल परिवार के स्तर पर है जैसे-जैसे आप ये दायरा बढातें है वैसे वैसे कहीं चुनौतियाँ आती है और इसके साथ साथ कहीं समाधान भी साथ लाता है ।
आपका जीवन ऐसा होना चाहिए जिसमें आपके जाने की क्षति केवल आपके परिवार , पड़ोस तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए अपितु पुरे देश को होनी चाहिऐ । जीवन ए.पी.जे.अब्दुल कलाम , अटलबिहारी वाजपेयी , विवेकानन्द , तुलसीदास , रहीम , इत्यादि के जैसा होना चाहिए जिनकें कार्यों

के कारण इन्हें सदैव याद किया जाता है और इनका जाना पुरे देश के लिए एक भारी क्षति है । अगर मेरी मानें तो जीवन की शुरूआत ही शमशान से होती है वहीं से उसके आगे की राह तय होती है ।

जैसा कि लोगों का मानना है कि जब बच्चा जन्म लेता है वह उसका पहला दिन है जीवन का लेकिन ये सच तो नहीं वो नौ महीनें अपनी माँ के गर्भ में रहकर आया है उसी प्रकार एक व्यक्ति की मृत्यु ये तय नहीं कर सकती की अब उसकी जीवनलीला समाप्त हो गयी है । क्या पता ये आरम्भ हों । क्या पता ये संहार नये सृजन के लिए हो ।

आपके मरने के बाद लोगों को याद रहों कि आपनें कुछ अच्छे काम किऐ थे ऐसा न हो कि आप आये और गये आपके रहनै या न रहनै का थोडा सा फर्क भी किसी पर न पड़े ।

जीवन

अगर हम विलियम शेक्सपियर ने जीवन की सात

अवस्थाएँ बताई है जिसमें पहली अवस्था एक शिशु की होती है जिसमें वो वह एक नवजात होता है जो की असहाय होता है। उसे गोद में उठाकर उसका ध्यान रखना पड़ता है। वह थोड़ी थोड़ी से बातो पर रोने लगता है, उल्टियां करता है।

दुसरी अवस्था एक अनिच्छुक विद्यार्थी की होती है जो विद्यालय जानें मे आनाकानी करता है और एक घोंघे की तरह रेंगतें हुए जाता है ।

तीसरी अवस्था एक प्रेमी की होती है जो एक भट्टी की भांति तपता है और आहें भरता है ।

चौथीं अवस्था एक सैनिक की भांति होता है जो हमेशा जो की गन्दी और अभद्र शब्दो का उपयोग करता है। उसने इस चरण में उसने कई तरह के विचित्र और गंदे शब्द सिख लिए हैं। वह खुद को एक दाढ़ी के सहारे शक्तिशाली दिखाने की कोशिश करता है। वह भावनात्मक और ईर्ष्यापूर्ण है। वह अपने सम्मान और अनुग्रह के लिए दूसरों

के साथ झगड़ता है। वह चिड़चिड़ा बन जाता है और अस्थाई मान सम्मान के पीछे भागता है।

पाँचवी अवस्था एक न्यायाधीश की होती है उसे ऐसा प्रतीत होता है की वह काफी समझदार एवं अनुभवी हो गया है। उसके यौवन का जोश पूरी तरह से ठंडा हो जाता है और वह व्यवाहारिक बन जाता है। वह बेईमान या निष्पक्ष साधनों से धन प्राप्त करना चाहता है। वह रिश्वत लेना शुरु कर देता है और इस प्रकार अपने भौतिक सुख के लिए बहुत कुछ जोड़ता है। अब उसे ज्यादा भाग दौड़ पसंद नहीं आता इसकी तुलना में वह बैठना आराम करना ज्यादा पसंद करता है जिसकी वजह से उसके पेट निकल जाते है ।
उसकी आँखे बहुत ही गहरी हो जाती हैं जो काफी कठोर लगती हैं और वह अब साधारण दाढ़ी रखता है।
जीवन की छठी अवस्था में मनुष्य बूढ़ा हो जाता है। अपने चाल चलन अपने उठने बैठने के अंदाज से वह काफी हास्यस्पद बन जाता है। उसकी आंखे

कमजोर हो जाती हैं जिसके लिए उसे चश्मे पहनने पड़ते हैं। अब उसके पैर जूतों में फिट नहीं आते जूतें काफी बडे दिखाई देते हैं। उसकी आवाज भी बदल जाती है जो की बोलते वक्त उसके शब्दों के साथ चिट्टी की आवाज भी सुनाई पड़ती है।

जीवन के अंतिम चरण में, आदमी एक बार फिर एक बच्चे में बदल जाता है वह सब कुछ भूलने लगता है वह दंतहीन (toothless) बन जाता है उसकी दृष्टि कमजोर हो जाती है और उसकी स्वाद इन्द्रियाँ भी काम करना बंद कर देती है। इस तरह वह इस दुनिया को छोड़ने के लिए तैयार हो जाता है।
विलियम के इस कृति में जीवन को अच्छे से बताया गया है किन्तु इसमें केवल उन दशाओं को ही बताया गया जो परिवर्तित होती रहती है जो की अल्पकालिक है । केवल ये दशाएँ ही जीवन नहीं । जीवन इससे कहीं व्यापक है जीवन में कहीं तरह के उतार-चढ़ाव , सुख-दुःख , प्यार-नफरत , द्वेष , ईर्ष्या , इत्यादि भाव आतें है और उन सभी भावों में

स्थिर रहनें वाला ही स्थितप्रज्ञ है ।

जीवन कैसे जीना है और क्यों

एक तथ्य ये है कि मनुष्य खुद को जन्म नहीं दे सकता या खुद को पैदा नहीं कर सकता, हाँ खुद को मिट जरूर सकता है।

शायद किसी की मंजूरी भी नहीं ली जाती कि हम तुम्हे पैदा करे या न करें। अगर ऐसा हो सकता तो अमिताभ बच्चन भी नहीं होते। (उन्होंने ये स्वीकार किया है कि एक बार वे अपने पिता से नाराज हो कर उन्हें यह कह देते है कि मुझे आपने क्यों पैदा किया) इस घटना पर श्री हरिवंश राय बच्चन जी ने एक छोटी सी कविता भी लिखी है।

ज़िन्दगी और ज़माने की
कशमकश से घबराकर
मेरे बेटे मुझसे पूछते हैं कि
हमें पैदा क्यों किया था?

और मेरे पास इसके सिवाय
कोई जवाब नहीं है कि
मेरे बाप ने मुझसे बिना पूछे
मुझे क्यों पैदा किया था?

और मेरे बाप को उनके
बाप ने बिना पूछे उन्हें और
उनके बाबा को बिना पूछे उनके
बाप ने उन्हें क्यों पैदा किया था?

ज़िन्दगी और ज़माने की
कशमकश पहले भी थी,
आज भी है शायद ज्यादा...
कल भी होगी, शायद और ज्यादा...

तुम ही नई लीक रखना,
अपने बेटों से पूछकर
उन्हें पैदा करना।

-डा. हरिवंश राय बच्चन

मैं क्षमाप्रार्थी हूँ कि मैं विषय से विमुख हो गया किंतु ये आवश्यक भी था । जीवन मिला ही है जीने के लिए। जीवन का औचित्य जीने में है। जिस प्रकार पेड़ स्वयं समाप्त नहीं हो सकता , उसे बढ़ना ही होता है, फल देना , छाया देना, फूल उगना आदि उसका स्वभाव है , उसका जन्म इसी उद्देश्य के लिए हुआ है, उसी प्रकार, मनुष्य को जब उनके माता पिता ने जन्म दिया ही है तो उन्हें उस जन्म का औचित्य पूर्ण करना ही पड़ता है।

तकलीफों से घबराकर, हार कर , परेशान हो कर, हिम्मत नहीं हारते है। जीवन समाप्ति पर हमारा हक नहीं होना चाहिए। एक जीवन कितने जीवनों का आधार होता है शायद कभी कोई मनुष्य चिंतन के द्वारा समझ पाए। इसलिए जीना आवश्यक है।

अंत समय

अंत समय में जब वह मरणासन स्थिति में होता है

तो कहा जाता है कि मरनें के समय उसकें जीवन की फिल्म विस्तार से उसके सामनें चलनें लगती है। उसकों जीवन के हर छोटी बड़ी घटना स्मरण होती है । अगर ऐसा होता है तो चेतन के पिता को मरतें वक्त जो दृश्य दिखे उनमे से कितनें सुखद व कितने दुःखद होंगे । आपके जीवन के अच्छे कार्य या कर्म आपकों मरतें वक्त एक सुख व संतोष देते है । और आपकें जीवन के अधिक बुरे कार्य या कर्म आपकों एक दुःख या उदविघ्नता देते है ।

Energy Is Never Created Nor Destroyed

ये सुत्र आत्मा पर भी लगता है क्योंकि आत्मा भी एक ऊर्जा है और अगर ये ऊर्जा है तो इसका निर्माण व अंत नहीं हो सकता है । तो इस कथन से ये तो सिद्ध होता है कि हम शरीर त्याग देगें पर मरेंगे नहीं क्योंकि मृत्यु हमारे भौतिक शरीर की होगी आत्मा की नहीं ।

तो कुछ का ये मानना होगा कि जब हम अमर है तो कर्म अच्छे करे या बुरे क्या फर्क पड़ता है लेकिन विश्वास मानिए इससे बहुत फर्क पड़ता है । भारतीय शास्त्रों मे ये बात उल्लेखित है कि अच्छे

कर्म करने वाला स्वर्ग व बुरे कर्म वाला नर्क जाऐगा

। इसका अर्थ है जैसा बोयेगा वैसा काटेगा । किंतु क्या ये सच है मालुम नहीं लेकिन आपकों स्वर्ग अर्थात् प्रंशसा और नर्क अर्थात् आलोचना इसी जीवन में मिलेगी और वह स्वर्ग और नर्क के समान है ।

एक शेर की कहानी से आपकों बतानें का प्रयास करता हूँ -

यह एक अफ्रीकी शेर की तस्वीर है, जो उसकी मृत्यु से थोड़े मिनट पहले ली गई है।

अपने जवानी के दिनों में, एक साधारण गर्जन के साथ, यह जानवर भय में जंगली जानवर के पूरे समूह को हिला देता था लेकिन अब यह अपने बुढ़ापे में है। वह मुश्किल से आगे बढ़ सकता है, अब इसके लिए अकेले में शिकार तक करना एक कठिन काम है। जैसे कि आप उसकी पसलियों को देखो। देखो वह कितना पतला है। वह जानता है कि यह उसका अंत है। यह शेर इतना शांत है और अपनी मौत को अपनी आंखों के पास और पास आता देख पा रहा है।

वह चिल्लाता नहीं है, वह बस अगले मिनट की प्रतीक्षा कर रहा है जब सब कुछ सन्नाटे (साइलेंस) में बदल जाएगा। अब उसे और भूख नहीं लगी। वह खड़े होने की पूरी कोशिश करता है। किसी न

किसी तरह से हर इंसान की किस्मत इस शेर जैसी ही होती है।

1, क्या आपको अपने धन पर गर्व है?

2. क्या आपको अपनी सुंदरता पर गर्व है?

3. क्या आपको अपने दबंग काया पर गर्व है?

4. क्या आपको अपनी प्रसिद्धि पर गर्व है?

एक दिन आएगा जब इन सभी चीजों का मतलब आपके लिए कुछ भी नहीं होगा। सब चीज़े आपको बिल्कुल व्यर्थ लगेगी।

इस शेर की तरह, एक दिन हम सब को अंत का सामना करना पड़ेगा। इस शेर की तरह, एक दिन हम अपने अतीत की छाया बनेंगे। इस शेर की तरह, एक दिन इस दुनिया में हमारा अस्तित्व नहीं रहेगा और हमारे स्थान पर कोई और होगा। लोग

हमें सिर्फ कुछ दिनों तक याद करेंगे और उसके बाद भूल जाएंगे कि हमारे नाम का व्यक्ति भी इस दुनिया में हुआ करता था।

मृत्यु ही असली जीवन है ।

M.Ram

कृपया सुझाव अवश्य दीजिएँ ।
धन्यवाद